अलका सरावगी के उपन्यासों की समकालीन प्रासंगिकता

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
के कला संकाय अंतर्गत हिन्दी विषय में
पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–रूपरेखा
2015

निर्देशक

डॉ. अलका श्रीवास्तव
प्राचार्य
शासकीय विधि महाविद्यालय,
भाटापारा (छ.ग.)

सह– निर्देशक

डॉ. रमेश अनुपम
सहायक प्राध्यापक
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
स्वशासी महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा

शिप्रा बेग

शोध केन्द्र :
हिन्दी विभाग
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
(स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

1.	शोध प्रबंध का शीर्षक	:–	अलका सरावगी के उपन्यासों समकालीन प्रासंगिकता
2.	विश्वविद्यालय	:–	पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
3.	शोध केन्द्र	:–	शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
4.	विषय	:–	हिन्दी साहित्य
5.	निर्देशक	:–	डॉ. अलका श्रीवास्तव प्राचार्य, शासकीय विधि महाविद्यालय, भाटापारा (छ.ग.)
6.	सह–निर्देशक	:–	डॉ. रमेश अनुपम सहायक प्राध्यापक शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
7.	शोध छात्रा	:–	श्रीमती शिप्रा बेग द्वारा– श्री एम. जेड. बेग ई.ए.सी. कालोनी, कलेक्ट्रेट परिसर (घड़ी चौक) रायपुर (छ.ग.)

रूपरेखा के लिए प्रपत्र

1. शोध प्रबंध का शीर्षक

अलका सरावगी के उपन्यासों की समकालीन प्रासंगिकता

2. प्रस्तावना

समकालीन महिला लेखिका अलका सरावगी ने अपने विविध उपन्यासों में एक ओर मानव जीवन का मनोविज्ञान को दर्षाया है। तो दूसरी ओर देष में व्याप्त अस्थिर राजनीतिक परिवेष, सामाजिक विडम्बना, सांस्कृतिक विघटन एवं वैष्विक संदर्भ में मुक्त अर्थव्यवस्था, भूमंडलीकरण, बाजारवादी संस्कृति, पूंजीवाद एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के जटिल यथार्थ को सषक्तता से प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त वर्तमान भौतिकतावादी संस्कृति के परिपेक्ष्य में मानवीय जीवनगत मूल्यों को स्थापित करती परिलक्षित होती है।

समकालीन शब्द अंग्रेजी के 'contemporary' का समानार्थी शब्द है जिसका तात्पर्य है, काल के सम या बराबर चलने वाला। अथार्त समय सीमा को पार करके हर समय के साथ चलने की क्षमता रखने वाला यानि की समकालीन। समकालीनता को हमें स्वंय अर्जित करना होता है अपने समय के साथ मुठभेड़ करते हुए उसमें हस्तक्षेप करते हुए अपनी समकालीनता स्वंय अर्जित करनी होती है। अतः समकालीनता, अतीत के अनुभव के साथ वर्तमान के संर्घष का संयोग है। जिसके मूल में समय के स्पन्दनों की सही पहचान एवं सार्थक प्रतिरोध सम्मिलित हैं।

समकालीन मंच एक ऐसी कड़ी है, जिसके द्वारा समूचे विष्व में मनुष्यों के संघर्षो एवं पूंजीवाद के विस्तार में एक संबंध होना देखते है। इसी तारतम्य में समकालीन उपन्यासकार अपने समय के यथार्थ को भौतिक दृष्टि से समझते ही नहीं, वरन् जो कुछ क्षतिग्रस्त है या विखण्डित है, उसकी पुर्नस्थापना की चेष्टा करना है। इसी समकालीन प्रासंगिकता को अलका सरावगी ने अपने समग्र उपन्यासों में प्रदर्षित किया है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक परिपेक्ष्य में सार्थक विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

राजनैतिक चुनौतियों एवं प्रासंगिकता के संदर्भ में अलका सरावगी ने समसामयिक परिस्थितियों को दर्षाते हुए राजनैतिक अस्थिरता, स्वार्थपरता एवं सत्ता

के लोभ को पूंजीवादी संस्कृति के संदर्भ में प्रस्तुत किया है वर्तमान राजनीति पर भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद के प्रभाव को मौलिकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों, अंधविष्वासों, पिछड़ापन एवं समुदाय की विडम्बनाओं के प्रति ध्यान आकर्षित किया है जिसमें युग–चेतना का स्वर मानव अस्तित्व के प्रसंग में आन्दोलित किया है। समाज के वर्ग, जाति धर्म की अनुभूतियों एवं संवेदनाओं को नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया गया है। समाज एवं व्यक्ति की अस्मिता की तलाष में पारम्परिक एवं आधुनिक विचारों के मिश्रण को समाकालीनता के परिदृष्य में प्रस्तुत किया है।

सांस्कृतिक चुनौतियों को समकालीन प्रासंगिकता के संबंध में नये एवं पुराने विचारों के द्वारा एक नवीन प्रयोग धर्मी दृष्टिकोण से उभारा गया है, जिसमें भूमंडलीकरण, पष्चिमीकरण एवं पूंजीवाद के कारण उत्पन्न अपसंस्कृति में जीवन मूल्यों को सहेजने का उपक्रम प्रस्तुत किया गया है। तीव्रगति से बदलते मानवीय मूल्यों एवं उसमें नैतिकता को उभारा गया है। सांस्कृतिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्य एवं मानव चरित्र को नई दिषा देने का कार्य सषक्तता से प्रस्तुत किया गया है।

अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक पक्ष को उभारते हुए समकालीन चुनौतियों एवं प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है। इस संदर्भ में लेखिका ने वर्तमान उदारीकरण, मुक्त अर्थव्यवस्था, भूमंडलीकरण एवं बाजारवादी संस्कृति की विडम्बनाओं के फलस्वरूप मनुष्य के नैतिक ह्ास को प्रदर्षित किया है इस परिपेक्ष्य में लेखिका भविष्य की चिन्ता करते हुए समाधान ढूंढती दिखाई देती है, नये प्रतिमानों को स्थापित करते हुए जीवनगत मानवीय मूल्यों को उद्घाटित करती परिलक्षित होती है।

इस प्रकार अलका सरावगी के समस्त उपन्यासों कलिकथा : वाया बाइपास, शेष कादम्बरी, कोई बात नहीं, एक ब्रेक के बाद एवं जानकीदास तेजपाल मेन्षन द्वारा विभिन्न आयामों को प्रदर्षित करते हुए उसके अनुषीलन का सार्थक प्रयास किया गया है। जिसमें परम्परावादी संस्कृति के ताने–बाने को बुनते हुए सार्थक प्रतिरोध द्वारा संभावनाओं को तलाषने प्रयास किया गया है।

इस प्रकार अलका सरावगी के समकालीन रचना विधान के द्वारा समकालीन चुनौतियों, प्रवृत्तियों एवं संभावनाओं के परिपेक्ष्य में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नये सृजनात्मकता की चेष्टा की गई है, उनके उपन्यासों को आधुनिक मानव का गद्य कहा जाये तो यह अतिषयोक्ति नही होगी।

3. पूर्व शोध कार्य का विवरण

हिन्दी के क्षेत्र में मेरी जानकारी के अनुसार अब तक कोई भी ऐसा कार्य प्रकाश में नहीं आया है, जिसने अलका सरावगी के समग्र उपन्यास साहित्य का समकालीन युगीन प्रासंगिकता के परिप्रेक्ष्य में विवेचन प्रस्तुत किया हो। उनके उपन्यासों का गहन एवं सम्यक् विश्लेषण के द्वारा सारगर्भित विस्तृत शोध करने का प्रयास किया गया है, जो हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान को उल्लेखित करेगा।

पूर्व कार्य के रूप में छत्तीसगढ़ में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में अलका सरावगी के उपन्यासों पर कोई भी शोध कार्य नहीं किया गया है। परन्तु गुजरात एवं महाराष्ट्र में संबंधित विषय पर किए गए शोध कार्य इस प्रकार हैं, जिसमें प्रस्तावित शोध के संपादन में दिशा–निर्देश प्राप्त किया जा सकता है। यथा :–

1. काटे हेमलता, 'अलका सरावगी और आशा बागे के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन', शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर (महाराष्ट्र) 2010

2. अवस्थी प्रीति, 'नारी विमर्श और अलका सरावगी का कथा साहित्य', सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्या नगर, गुजरात 2011

3 कुरियाकोसे रीता, प्रेमचंद के उपन्यासों में समकालीन यर्थाथवाद का पूर्नमुल्यांकन, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, वर्धा, 2013

4 जेकब रूबि एलसा, समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापितों का यर्थाथ, कोचीन यूनिर्वसिटी, साइंस एंड टेक्नालॉजी, 2010

4. शोध का औचित्य

अलका सरावगी के समग्र उपन्यास वैविध्यपूर्ण है, जिसमें पारम्परिक, आधुनिक एवं समकालीन परिस्थितियों को देशकाल एवं स्थिति के संदर्भ में बखूबी दर्शाया है। इसके अतिरिक्त एक महिला लेखक होते हुए भी, समकालीन युगीन विडम्बनाओं जैसे साहसिक विषय पर अपनी कलम से समकालीन चुनौतियों एवं संभवनाओं को तलाशने का सशक्त प्रयास किया है। प्रयोगधर्मिता और अभिनव दृष्टिकोण को अपने उपन्यासों में मौलिकता के साथ उभारा है। अतः इसलिए मेरे द्वारा उक्त विषय को अपने शोध कार्य का विषय बनाने का उद्देश्य सार्थक बन पड़ा है।

5. शोध का महत्व

प्रस्तावित विषय पर अपेक्षाकृत बहुत ही कम शोध कार्य हुए हैं। अब तक अधिकतर कार्य अलका सरावगी के कथा साहित्य पर ही हुए हैं। अलका सरावगी के समग्र उपन्यासों में समकालीन युगीन प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक विवेचन एवं अध्ययन करने का प्रयास अपने आप में एक महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके माध्यम से अलका सरावगी के उपन्यासों को एक नये दृष्टिकोण से सबके समक्ष लाना है, जो इस शोध कार्य को नयी दिशा प्रदान करते हुए सार्थक मार्ग प्रशस्त करने का विनम्र प्रयास है। संभावित महत्व इस प्रकार हैं :–

1. अलका सरावगी का समकालीन महिला उपन्यास लेखन में योगदान का महत्व
2. अलका सरावगी के समग्र उपन्यासों का समकालीन युगीन संदर्भ में प्रभाव
3. अलका सरावगी के उपन्यासों का नये प्रयोगधर्मी संदर्भ में प्रभाव
4. अलका सरावगी के विविध उपन्यासों का नयी दिशा एवं नये प्रतिमानों के साथ प्रस्तुतीकरण करना है, जो हिन्दी साहित्य के शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

6. प्रस्तावित शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध प्रविधि के अंतर्गत वस्तु तथ्यात्मक प्रणाली एवं प्रवृत्ति मूलक प्रणाली का प्रयोग किया जायेगा। एवं लेखक के विभिन्न ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ, एवं अभिलेख डायरियां इत्यादि को शोध कार्य में सम्मिलित कर शोध को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त प्रश्नावती एवं साक्षात्कार प्रविधि द्वारा महात्वपूर्ण तथ्यों का संकलन किया जायेगा। इंटरनेट, ब्लॉग, ई–मेल इत्यादि माध्यमों को शोध प्रविधि में शामिल कर शोध को सशक्तता एवं मौलिकता प्रदान किया जायेगा।

7. शोध सीमाएं

शोध कार्य के दौरान शोध को अतिव्यापक अथवा संकुचित होने से बचाने के लिए शोध की दिशा में भटकाव की स्थिति न होने पाये। इसके लिए शोध की सीमाएं निर्धारित की जाती है। उन सीमाओं को ध्यान में रखकर किया गया शोध कार्य निर्धारित समय–सीमा में सम्पन्न किया जा सकता है एवं शोध का विस्तार उचित

एवं सारगर्भित तथ्यों के साथ श्रेष्ठता को प्राप्त करता है। इस आधार पर मेरे द्वारा अपने विषय के संदर्भ में इस प्रकार सीमाएं निर्धारित की गयी हैं :–

1. शोध कार्य के निर्धारित समय को ध्यान में रखते हुए मैंने अलका सरावगी के पांच उपन्यासों को अपने शोध के केन्द्र में रखते हुए समकालीन युगीन परिप्रेक्ष्य में शोध कार्य को निश्चित किया है।

2. अपने शोध विषय के अन्तर्गत मैंने उपन्यास के उद्भव एवं विकास को सम्मिलित करते हुए समकालीन प्रवृत्तियों को हिन्दी उपन्यास में रेखांकित करने का प्रयास किया है।

3. समकालीन युगीन प्रासंगिकता को अलका सरावगी के समस्त उपन्यासों में निर्धारित एवं सार्थक तथ्यों के साथ शोध विषय को सशक्तता प्रदान करना है।

8. प्रस्तावित अध्यायीकरण –

शोध प्रबंध को अध्यायों में विभक्त करने वाली प्रस्तावित रूपरेखा इस प्रकार है :–

अलका सरावगी के उपन्यासों की समकालीन प्रासंगिकता

<u>प्रस्तावना –</u>

1. विषय की व्याख्या
2. विषय की व्याप्ति, सीमाएं एवं पूर्वानुसंधान
3. प्रबंध का कार्यक्षेत्र
4. महत्व

अध्याय1– समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य :–

1.1 हिन्दी उपन्यास साहित्य का सिंहावलोकन

1.2 समकालीन हिन्दी उपन्यास का परिचय

1.3 समकालीन हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियॉ

अध्याय2– समकालीन महिला हिन्दी उपन्यास लेखन :–

2.1 हिन्दी उपन्यास साहित्य में महिलाओं का स्थान

2.2 समकालीन महिला हिन्दी उपन्यास लेखन

2.3 समकालीन महिला हिन्दी उपन्यास लेखन और अलका सरावगी

अध्याय3– अलका सरावगी के उपन्यासों में पारिवारिक परिदृष्यः–

3.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक प्रसंग

3.2 अलका सरावगी के उपन्यासों में पारिवारिक विघटन

3.3 नारी सषक्तिकरण और संघर्ष चेतना

अध्याय 4– अलका सरावगी के उपन्यास साहित्य में सामाजिक परिदृष्यः–

4.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिदृष्य

4.2 अलका सरावगी के उपन्यासों में वर्णित समकालीन समाज का प्रभाव

4.3 जाति चेतना और समकालीनता

अध्याय 5– अलका सरावगी के उपन्यासों में राजनैतिक परिदृष्य :–

5.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित राजनैतिक विचाराधाराऍ

5.2 समकालीन राजनैतिक परिदृष्य

5.3 उपन्यासों के चरित्र में समकालीन राजनैतिक प्रभाव

अध्याय 6– अलका सरावगी के उपन्यासों में आर्थिक परिदृष्य :–

6.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक परिदृष्य

6.2 अलका सरावगी के उपन्यासों में समकालीन आर्थिक चुनौतियॉ

6.3 अलका सरावगी के उपन्यासों में वर्णित आर्थिक स्तर

अध्याय 7– अलका सरावगी के उपन्यासों में सांस्कृतिक परिदृष्य :–

7.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्य

7.2 समकालीन सांस्कृतिक चुनौतियॉ

7.3 सांस्कृतिक चेतना और जीवन मूल्य

डपसंहार –

परिशिष्ट – (अ) जीवन वृत – अलका सरावगी

(ब) समग्र रचना संसार

(स) साक्षात्कार

(द) रचनाकारों के कलम से

– आधार ग्रन्थ

– सन्दर्भ ग्रन्थ

9. आधार ग्रन्थ

- अलका सरावगी; 'कलिकथा : वाया बाइपास', आधार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2001
- अलका सरावगी; 'शेष कादम्बरी, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2004
- अलका सरावगी; 'कोई बात नहीं', राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2004
- अलका सरावगी; 'एक ब्रेक के बाद', राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010
- अलका सरावगी; 'जानकीदास तेजपाल मेन्शन', राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015

10. संदर्भ ग्रन्थ

- कौशिक शिव शरण, 'दसवें दशक के हिन्दी उपन्यास और भूमण्डलीकरण', अध्ययन पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण, 2001
- कुमार जैनेन्द्र, 'जीवन, समय और स्वतंत्रता', पूर्वोदय प्रकाशन, संस्करण, 2001
- गौतम लक्ष्मी, 'उत्तर आधुनिकता और समकालीन कथा साहित्य', लोकभारती प्रकाशन, संस्करण, 2013
- चव्हाण अर्जुन, 'समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष', भारती ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, 2007
- जोशी ज्योतिष, 'उपन्यास की समकालीनता', भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, 2007
- टण्डन रामनारायण प्रसाद, 'समकालीन उपन्यासों में नारी', मित्तल एंड संस, प्रथम संस्करण, 2014
- मोहनन एन., 'समकालीन हिन्दी उपन्यास', वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013
- राय गोपाल, 'उपन्यास की संरचना', राजकमल प्रकाश, प्रथम संस्करण, 2012
- सिंह लाल साहब, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में युगबोध', अभय प्रकाशन, संस्करण 2015
- सिंह त्रिभुवन, 'हिन्दी उपन्यास शिल्प ओर प्रयोग', हिन्दी प्रचारक संस्थान, प्रथम संस्करण, 1973
- सिंह नामवर (सम्पादक), 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास', राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010
- श्रीवास्तव परमानन्द, 'उपन्यास के विरूद्ध उपन्यास', लोकभारती प्रकाशन, संस्करण, 2012

शोध निर्देशक के प्रकाशित ग्रंथों का विवरण

- अलका श्रीवास्तव – **"अमरकांत की कहानियाँ : आम आदमी की जिजीविषा"** Research Journal of Social and Life Sciences, ISSN 0973-3914, Vol. XIV-I, Year 07, June- 2013
- अलका श्रीवास्तव – **"प्रखर राष्ट्रीय चेतना : हिन्दी"** SHODH PRAKALP, Research Journal, ISSN-2278-3911, Vol. LX-IV, Year-18, July-Sept. 2013.
- अलका श्रीवास्तव – **"तमय उपन्यास की मानवीय त्रासदी"** Shrinkhala, A Multi-Disciplinary International Journal, ISSN-2321-290X, RNI No. UPBIL/2011/43595, Vol. LX-2-4, July 2013.
- अलका श्रीवास्तव – **"भीष्म याहनी की कहानियाँ : रचना दृष्टि"** Research Journal of Social and Life Sciences, ISSN-0973-3914,Vol.-XV, March 2014.
- अलका श्रीवास्तव – **"लोकगीतों से थिरकता छत्तीसगढ़"** SHODH PRAKALP, A Quarterly Research Journal, ISSN 2278-3911, Year-20, Vol.-LXV, Oct-Dec., 2013.
- अलका श्रीवास्तव, लक्ष्मी सोनवानी – **"कृष्णाश्रयी शाखा और अष्टछाप के कवि"** SHODH PRAKALP, Research Journal, ISSN 2278-3938, Vol.-66, Jan-March 2014.
- अलका श्रीवास्तव, गिरधारी लाल लोधी – **"विनोद कुमार शुक्ल का कथा साहित्यः निम्न मध्यवर्गीय मानसिकता"** Shrinkhala, A Multi-Disciplinary International Journal, Vol.-1, ISSN-2321-290X, Oct. 2013.

<u>शोध निर्देशक के प्रकाशित शोधपत्रों का विवरण</u>

- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''मूल्य संक्रमण और मन्नू भंडारी''**, 2011, Lab to land, Vol.-3, No. 10, pp 310-312, ISSN No. 0975-282X
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''हिन्दी व्यंग्य का वर्तमान''**, 2011, रिसर्च जनरल आफ आर्ट्स, मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेस, अंक–4, पृष्ठ– 31, ISSN No. 0973-4083
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''भारत विभाजन : हिन्दी की चर्चित कहानियॉं''**, 2011, रिसर्च जनरल आफ आर्ट्स, मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेस, अंक–5, पृष्ठ– 50, ISSN No. 0973-4083
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''साहित्य का इतिहास : पुर्नलेखन की समस्या''**, 2011, रिसर्च जनरल आफ आर्ट्स, मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेस, अंक–10, पृष्ठ– 31, ISSN No. 0973-3914
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''महिला कथा लेखन की सार्थकता''**, 2011, Lab of land, Vol.-3, No. 11, pp
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''श्रेष्ठ निबंधाकार : बख्शी जी''**, 2011, बख्शी सृजनपीठ भिलाई, प्रवेशांक, पृष्ठ– 70
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''जीवन के शाश्वत मूल्य – कबीर''**, 2012, पृष्ठ –50, शोध – प्रकल्प, अंक–58, पृष्ठ– 50, ISSN No. 097-6459
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''महादेवी वर्मा : भारतीय नारी चिंतन''**, 2012, शोध – प्रकल्प, अंक–58, पृष्ठ– 50, ISSN No. 0978-81-87364-45-0
- डॉ. श्रीमती अलका श्रीवास्तव – **''ग्रामीण परिवेश एवं कृषक जीवन और कवि केदार''**, 2012, शोध – प्रकल्प, अंक–58, पृष्ठ– 50, ISSN No. 0975-4083

निर्देशक	सह– निर्देशक	शोध छात्रा
डॉ. अलका श्रीवास्तव प्राचार्य शासकीय विधि महाविद्यालय, भाटापारा (छ.ग.)	डॉ. रमेश अनुपम सहायक प्राध्यापक शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)	शिप्रा बेग

अग्रेषित

अध्यक्ष
शोध केन्द्र :
हिन्दी विभाग
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
(स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)